अमृत सीडस एण्ड ओर्गेनिक्स

अधिक उपज एवं अधिक आय के लिये ''अमृत सीडस''के उन्नत बीज एवं कृषि के उन्नत तरीके

गेहूँ

किस्म	पकने की अवधि (दिनों में)	आदर्श अवस्था में अधिकतम संभावित उपज क्वि./है.	बीज दर किलो/है.
राज–4037	115-120	45-50	100
राज–4079	115-125	45-47	100
राज–4238	100-110	40-45	100

नोट: बुवाई से पूर्व कार्बोनडाजिम/थायरम दवा से 2.5–3 ग्रा./कि.ग्रा. की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

भूमि उपचार

खेत की अच्छी तैयारी करने के पश्चात् दीमक एवं भूमि में रहनेवाले अन्य कीड़ों की रोकथाम के लिए क्यूनालफास 1.5% या मिथाइल पैराथियान 2% चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से बीज बोने से पहले अन्तिम जुताई के समय खेत में मिलावें।

उर्वरक किलो/है.

नत्रजन	फास्फोरस	पोटाश
120	90	60

नत्रजन की आधी तथा फास्फोरस एवं पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई से पूर्व ऊर कर देनी चाहिये। शेष नत्रजन की आधी मात्रा प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई के साथ छिड़क कर देना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें:
201/ए–206, द्वितीय फ्लोर, मोहसीन मंजिल, 252, शॉपिंग सेन्टर, कोटा
Cont.: 9829038407

सिंचाई

सामन्यत: गेहूँ की फसल में स्थिति तथा नमी की उपलब्धता को देखते हुए भारी मिट्टी में 4–6 सिंचाई तथा हल्की मिट्टी में 6–8 सिंचाई की आवश्यकता होती है।हल्की मिट्टी में फसल की निम्न अवस्थाओं पर चिंचाई करनी चाहिए।

1. 20–25 दिन बाद शीर्ष जड़ जमते समय
2. 40–45 दिन बाद फूटान होते समय
3. 65–70 दिन बाद गाँठ बनते समय
4. 85–90 दिन बाद बालियाँ निकलते समय
5. 100–110 दिन बाद बालियों के दुधिया अवस्था पर
6. 115–120 दिन बाद दाना पकते समय

पौध संरक्षण

1. दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरोपायरेफास 20 ईसी चार लीटर ढाई लीटर प्रति सिंचाई के साथ देवें
2. शूट फ्लाई हेतु अंकुरण के समय इसके प्रकोप से बचने के लिए मोनोक्रोटोफास 30 ईसी 500 मिली लीटर पानी में मिलाकर छिड़के।
3. सैन्यकीट, चैन वाली लट, पायरिला, तथा छेदक कीड़ों की रोकथाम के लिए क्यूनालफास 25 ईसी या मिथायल पैराथियोन को छिड़के।
4. रोली रोग से बचने के लिए 25 किलो गन्धक चूर्ण प्रति हैक्टर की दर से 15 दिन के अन्तराल से 2–3 बार सुबह या शाम को भुरकाव करें।

खरपतवार नियन्त्रण

1. प्रथम सिंचाई के 10–12 दिन बाद कम से कम एक बार निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दे व बाद में भी आवश्यकता अनुसार निकालते रहे। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार को नष्ट करने के लिए बोनी किस्में में बुवाई के 30–35 दिन एंव अन्य किस्मों में 40–45 दिनों के बीच 500 ग्राम 2, 4–डी एक्टर साल्ट 750 ग्राम अमाइन साल्ट सक्रिय तत्व प्र./है. 500–700 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। गुल्लीडंडा (फैलेरिस माईनर) के नियंत्रण हेतु गेहूँ की बुवाई के 30–45 दिन बाद आइसोप्रोटयूरान (टोल्कन) अथवा मेटाविसरान (डोसानेक्स)अथवा मेथो–बेन्जथियाजूरान (ट्रिब्युनिल) हल्की मिट्टी हेतु पोन किलो तथा भारी मिट्टी हेतु सवा किलो सक्रिय तत्व का पानी में घोल बनाकर एक साथ छिड़काव करें।

ध्यान रखें: सिंचित क्षेत्र में बीज को 5 सेमी से अधिक गहरा न बोयें व बीज समान रुप से उपयोग करें। फसल बुवाई का उपयुक्त समय नवम्बर प्रथम से तीसरे सप्ताह तक। क्षेत्र के कृषि विभाग की सिफारिश के अनुसार ही खेती करें। (उपज क्षमता:–बुवाई क्षेत्र, भूमि प्रकार, बोने का समय, जलवायु एवं खेती करने के तौर तरीके पर निर्भर होती है।)